टिप्पणी

16

वित्तीय विवरण : एक परिचय

पिछले पाठों में आप व्यावसायिक लेन देनों का विभिन्न लेखा पुस्तकों में लेखा-जोखा करना एवं उनकी खाता बही में खतौनी करना सीख चुके हैं। आप खातों का शेष ज्ञात करना तथा तलपट बनाना भी सीख चुके हैं। लेखांकन का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य अंतिम परिणाम जानना भी है, अर्थात् एक निश्चित अवधि के पश्चात् व्यावसायिक इकाई के व्यवसाय परिचालन से होने वाले लाभ अथवा हानि तथा एक निश्चित तिथि को वित्तीय स्थिति का ज्ञान। इसके लिए कुछ वित्तीय विवरण बनाए जाते हैं जिन्हें, आय विवरण (अर्थात् व्यापार खाता एवं लाभ-हानि, खाता) जिससे यह ज्ञात किया जाता है कि एक निश्चित अवधि में व्यवसाय को क्या आय हुई है तथा स्थिति विवरण (अर्थात् तुलन पत्र) जिससे व्यवसाय की एक निश्चित तिथि को वित्तीय स्थिति का पता लगता है, कहते हैं।

इस पाठ में आप किसी लाभ कमाने वाली व्यावसायिक इकाई द्वारा तैयार किए जाने वाले वित्तीय विवरणों का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- वित्तीय विवरणों का अर्थ एवं उनके उद्देश्यों को समझा सकेंगे;
- वित्तीय विवरणों को व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा स्थिति विवरण में वर्गीकृत कर सकेंगे;
- पूँजीगत व्यय एवं आगम (Revenue) व्यय तथा पूँजीगत प्राप्तियाँ एवं आगम (Revenue) प्राप्तियों में अंतर कर सकेंगे;
- 'व्यापार खाता' एवं 'लाभ–हानि खाता' के उद्देश्य को समझा सकेंगे;

टिप्पणी

- व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता का प्रारूप बना सकेंगे; तथा
- स्थिति विवरण/तुलन पत्र को बना सकेंगे।

16.1 वित्तीय विवरण : अर्थ एवं उद्देश्य

विद्यार्थी एक वर्ष अध्ययन करने के बाद यह जानना चाहता है कि उस अवधि में उसने कितना सीखा है, इसी प्रकार से प्रत्येक व्यावसायिक उद्यम अपनी अवधि विशेष जो कि सामान्यतः एक वर्ष होती है, की अपनी गतिविधियों का परिणाम जानना चाहता है तथा एक तिथि विशेष को, जो कि एक अवधि की अंतिम तिथि होती है, वित्तीय स्थिति के संबंध में जानना चाहता है। इसके लिए यह विभिन्न विवरणों को तैयार करता है जिन्हें वित्तीय विवरण कहते हैं।

> वित्तीय विवरण वह विवरण है जो कि एक लेखा अवधि के अंत में बनाए जाते हैं जो कि सामान्यतः एक वर्ष होता है। यह विवरण व्यापार एवं लाभ-हानि खाता तथा स्थिति विवरण अर्थात् तुलन पत्र होते हैं।

वित्तीय विवरणों के उद्देश्य

वित्तीय विवरणों से यह ज्ञात होता है कि एक व्यावसायिक इकाई ने एक निश्चित अवधि में क्या लाभ कमाया है अथवा उसे क्या हानि हुई है तथा यह एक निश्चित अवधि की समाप्ति पर इसकी वित्तीय स्थिति जानने के लिए बनाए जाते हैं।

वित्तीय विवरण सामान्यतः दो प्रकार के होते हैं—(क) आय विवरण जो कि व्यापार खाता एवं लाभ-हानि खाता से मिलकर बनता है तथा (ख) स्थिति विवरण अर्थात् तुलना पत्र।

वित्तीय विवरणों के बनाने के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:—

1. **व्यवसाय परिचालन के परिणामों का निर्धारण :** प्रत्येक व्यवसायी यह जानना चाहता है कि अब अवधि विशेष में उसके व्यवसाय ने व्यावसायिक कार्यों से क्या लाभ कमाया है अथवा उसे क्या हानि हुई है? आय विवरण इस उद्देश्य की पूर्ति करता है।
2. **वित्तीय स्थिति का निर्धारण :** वित्तीय विवरण व्यवसाय की एक तिथि विशेष जो कि सामान्यतः लेखा वर्ष की अंतिम तिथि होती है, को वित्तीय स्थिति को दर्शाता है। इसके लिए स्थिति विवरण अर्थात् तुलन पत्र बनाया जाता है।
3. **सूचना का स्रोत :** वित्तीय विवरण व्यावसायिक इकाई के वित्त के संबंध में सूचना का महत्त्वपूर्ण स्रोत होते हैं। इस सूचना में वित्त प्रबंधक को व्यवसाय की वित्तीय गतिविधियों की योजना तैयार करने एवं धन के उचित प्रयोग करने में सहायता मिलती है।

टिप्पणी

4. **प्रबंधकीय निर्णय में सहायक :** प्रबंधक चालू वर्ष के परिणामों की पिछले वर्षों के परिणामों से तुलना कर व्यवसाय की लाभ अर्जन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन कर सकता है तथा उसी के अनुसार प्रबंधकीय निर्णय ले सकता है।

5. **व्यवसाय की शोधन क्षमता का सूचकांक :** वित्तीय विवरण व्यवसाय की अल्प अवधि एवं दीर्घ अवधि शोधन क्षमता को दर्शाते हैं इससे उद्यम को बैंक तथा अन्य वित्तीय संस्थानों से ऋण लेने तथा वस्तुओं के उधार क्रय करने में सहायता मिलती है।

वित्तीय विवरणों का महत्व

i. **वित्तीय :** प्रथम तो वित्तीय विवरण शब्द का कोई अर्थ नहीं है। गिनती के लिए संख्या होती है, जबकि विवरण शब्दों में दिखाए जाता है। अतः इन दोनों के मिश्रण का कोई औचित्य नहीं है। लेकिन जब हम मौद्रिक विवरण के रूप में देखते हैं तो यह अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

ii. **निर्णय लेना सुगम :** यह न केवल आपके लिए बल्कि प्रबन्धक एवं अंशधारकों के लिए भी महत्वपूर्ण होते है, क्योंकि वित्तीय विवरण कंपनी की सफलता एवं योग्यता को प्रदर्शित करते है, जबकि अंशधारक वित्तीय विवरणों से यह तय करते हैं कि कम्पनी में विनियोग किया जाए कि नहीं। दूसरे शब्दों में वित्तीय विवरणों से पता लगता है कि कम्पनी ने धन खोया है अथवा अर्जित किया है।

iii. **परिचालन निष्पादन को दर्शाना :** वित्तीय विवरणों में कम्पनी के राज छुपे होते हैं। यह कम्पनी लाभ कमा रही है अथवा हानि उठा रही यह तो विवरण बताते ही हैं इसके साथ यह भी सुराग देते हैं कि प्रबन्ध अपनी आगम को बढ़ाने के लिए कहाँ से और अधिक संसाधन जुटा सकता है। इसके अतिरिक्त वित्तीय विवरण कम्पनी के बीते समय के निष्पादन एवं क्षमता को उजागर करते हैं।

पूँजीगत व्यय एवं आगम (Revenue) व्यय, पूँजीगत प्राप्तियाँ तथा आगम (Revenue) प्राप्तियाँ

व्यापार खाता एवं लाभ-हानि खाता बनाने के लिए आगम व्यय, आगम प्राप्तियां एवं पूँजीगत व्यय तथा पूँजीगत प्राप्तियों के ज्ञान की आवश्यकता होती है। यह ज्ञान आगम मदों के वर्गीकरण में सहायक होता है जिन्हें एक ओर तो व्यापार खाता तथा लाभ हानि खाते के एक ओर लिखा जाता है तथा दूसरी ओर पूँजीगत मदों (व्यय एवं प्राप्तियां) के आधार पर स्थिति विवरण तैयार किया जाता है।

पूँजीगत व्यय वह व्यय है जो अचल संपत्तियों के क्रय करने पर किये जाते हैं जो व्यवसाय की अर्जन क्षमता में वृद्धि करते हैं। पूँजीगत व्यय से फर्म को कई वर्षों तक लाभ मिलता है। पूँजीगत व्यय के उदाहरण हैं—भवन, संयन्त्र एवं मशीन आदि को प्राप्त करने के लिए किया गया व्यय।

टिप्पणी

दूसरी ओर आगम (Revenue) व्यय वह व्यय है जो किसी व्यवसाय के सामान्य व्यावसायिक लेन-देनों पर किया जाता है तथा जिसका लाभ उसी लेखा वर्ष की अवधि में प्राप्त हो जाता है।

व्यय का एक और भी वर्ग होता है जिसे आस्थगित आगम व्यय कहते हैं। यह वह खर्च होते हैं जो किसी एक लेखा वर्ष में किये जाते हैं, लेकिन जो पूर्ण रूप से अथवा उनका एक भाग आगे आने वाले समय से संबंधित होता है। अन्यथा यह व्यय आगम वर्ग के होते हैं। आस्थगित आगम व्यय के उदाहरण हैं—विज्ञापन पर भारी खर्च जैसे कि नई वस्तु को बाजार में लाना, अनुसंधान एवं विकास पर किया गया व्यय आदि।

पूँजीगत व्यय एवं आगम (Revenue) व्यय में अंतर

अंतर का आधार	*पूँजीगत व्यय*	*आगम व्यय*
1. उद्देश्य	यह स्थायी संपत्ति क्रय करने के लिए किया जाता है।	यह स्थायी संपत्ति के रखरखाव के लिए किया जाता है।
2. लाभ-उपार्जन क्षमता	यह व्यवसाय की लाभ-उपार्जन क्षमता बढ़ाता है।	यह व्यवसाय की लाभ-उपार्जन क्षमता को बनाए रखने में सहायक होता है।
3. लाभ का काल	इसका लाभ कई वर्षों तक मिलता रहता है।	इसका लाभ केवल एक लेखांकन वर्ष की अवधि के लिए है।
4. वित्तीय विवरणों में स्थान	यह स्थिति-विवरण की मद है तथा संपत्ति के रूप में दर्शाया जाता है।	यह व्यापार तथा लाभ-हानि खाते की मद है तथा इन दोनों में से किसी एक के नाम पक्ष में दर्शाया जाता है।
5. व्यय की प्रकृति	यह अनावर्तक (Non-recurring) प्रकृति का होता है।	यह आवर्तक (Recurring) प्रकृति का होता है।

पूँजीगत प्राप्तियाँ एवं आगम (Revenue) प्राप्तियाँ

पूँजीगत प्राप्तियां वह प्राप्तियां हैं जो सामान्य रूप से व्यापार के परिचालन में नहीं होती है। इस प्रकार की प्राप्तियों के उदाहरण हैं—अचल संपत्तियों की बिक्री, ऋण लेना आदि। यह प्राप्तियाँ व्यवसाय की आय नहीं मानी जाती हैं।

आगम प्राप्तियाँ वह प्राप्तियाँ हैं जो व्यवसाय की सामान्य गतिविधियों के परिचालन में होती है, प्राप्त वस्तुओं की बिक्री, किराया प्राप्ति, लाभांश प्राप्ति आदि कुछ आयगत प्राप्तियों के उदाहरण हैं। यह मद व्यवसाय की आय होती है।

'पूँजीगत प्राप्तियाँ' एवं 'आगम (Revenue) प्राप्तियाँ' में अंतर

अंतर का आधार	*पूँजीगत प्राप्तियां*	*आगम प्राप्तियां*
स्रोत	प्राप्तियां जो व्यवसाय के सामान्य परिचालन में नहीं उत्पन्न होती।	प्राप्तियां जो व्यवसाय के सामान्य परिचालन में उत्पन्न होती है।
प्रकृति	यह पूँजीगत वर्ग की हैं, इसलिए व्यवसाय की आय नहीं मानी जाती।	यह आगम प्रकृति की होती है, इसलिए व्यवसाय की आय मानी जाती है।
घटित होना	यह अनावर्तक प्रकृति की होती हैं।	यह आवर्तक प्रकृति की होती हैं। हैं।

पाठगत प्रश्न 16.1

I. व्यय की निम्नलिखित मदों को पूँजीगत व्यय, आगम (Revenue expenditure) व्यय एवं आस्थगित आगम व्यय (Deferred revenue expenditure) वर्गों में विभक्त कीजिए:

(i) मशीन के क्रय पर किया गया व्यय।

(ii) भवन की मरम्मत पर किया गया व्यय।

(iii) बाजार में नये उत्पाद को लाने के लिए विज्ञापन पर किया गया भारी व्यय।

(iv) व्यवसाय के प्रयोग के लिए मोटर वाहन का क्रय।

II. वित्तीय विवरणों का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य व्यवसाय के परिचालन के परिणाम जानना है। वित्तीय विवरणों के अन्य उद्देश्यों को लिखिए।

(क) .....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

16.2 व्यापार खाता

आय विवरण के दो भाग होते हैं—व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता। आइए पहले व्यापार खाते का अध्ययन करें। कोई भी व्यावसायिक इकाई या तो दूसरों से माल का क्रय कर उन्हें लाभ के लिए बेचती है या फिर उनकी विनिर्माण कर उनकी बिक्री करती है। इन क्रियाओं से होने वाले लाभ अथवा हानि का निर्धारण करने के लिए एक विवरण बनाया जाता है जिसे व्यापार खाता कहते हैं।

टिप्पणी

व्यापार खाता व्यवसाय की व्यावसायिक क्रियाओं का परिणाम ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है। यह (व्यापार खाता) दर्शाता है कि खरीदे गये अथवा निर्मित माल को बेचने से व्यवसाय को लाभ हुआ है अथवा हानि। एक लेखा वर्ष की शुद्ध बिक्री में से बिके माल के लागत मूल्य को घटा देते हैं। यदि कुल विक्रय मूल्य बिके माल की लागत से अधिक है तो अंतर की राशि सकल लाभ होगी। दूसरी ओर यदि माल का लागत मूल्य समस्त शुद्ध बिक्री से अधिक है तो अंतर की राशि सकल हानि होगी। बिके हुए माल की लागत से संबंधित सभी खाते जैसे कि प्रारंभिक स्टॉक, शुद्ध क्रय अर्थात क्रय से बाह्य वापसी घटाई गई, प्रत्यक्ष व्यय जैसे कि मजदूरी, भाड़ा एवं अंतिम स्टॉक तथा शुद्ध बिक्री (विक्रय घटा विक्रय वापसी) को व्यापार खाते में ले जाया जाता है। तत्पश्चात् इस खाते का शेष ज्ञात किया जाता है। जमा शेष सकल लाभ दर्शाता है तथा नाम शेष सकल हानि दर्शाता है।

व्यापार खाता बनाने से पहले बिके हुए माल की लागत का अर्थ जानना आवश्यक है।

बिके हुए माल की लागत एवं सकल लाभ (Cost of goods sold and gross profit)

व्यावसायिक इकाई बाजार में बिक्री के लिए या तो माल का क्रय करती है अथवा उसका निर्माण करती है। बिके हुए माल के लागत मूल्य की गणना एक व्यावसायिक इकाई की एक विशेष अवधि की व्यापारिक गतिविधियाँ से अर्जित लाभ (सकल लाभ) अथवा जो हानि हुई है (सकल हानि) को ज्ञात करने के लिए की जाती है।

बिके हुए माल की लागत = क्रय की गई वस्तुओं की राशि + वस्तुओं को विक्रय स्थल पर लाने पर किया गया व्यय अथवा वस्तुओं के उत्पादन पर किया गया व्यय जिन्हें प्रत्यक्ष व्यय कहते हैं।

यदि वर्ष के प्रारंभ में अथवा उसके अंत में विक्रय के लिए उपलब्ध वस्तुओं का स्टाक है तो बिके हुए माल की लागत की गणना इस प्रकार की जायेगी:

बिके हुए माल की लागत =
प्रारंभिक स्टाक + शुद्ध क्रय + समस्त प्रत्यक्ष व्यय – अंतिम स्टाक

सकल लाभ = शुद्ध विक्रय – बिके हुए माल की लागत

उदाहरण 1

नीचे दी गई सूचना से बिके हुए माल की लागत ज्ञात कीजिए:

	₹
प्रारंभिक स्टॉक	10,000
अंतिम स्टॉक	8,000
क्रय	80,000

टिप्पणी

क्रय पर भाड़ा	2,000
मजदूरी	6,600

हल

बिके हुए माल की लागत =

प्रारंभिक स्टॉक + क्रय + प्रत्यक्ष व्यय (क्रय पर भाड़ा + मजदूरी) – अंतिम स्टॉक

= ₹ (10,000 + 80,000 + 8,600) – (2,000 + 8,000)

= ₹ 90,600

उदाहरण 2

नीचे दी गई सूचना से बिके हुए माल की लागत तथा सकल लाभ ज्ञात कीजिए।

	₹
विक्रय	62,500
विक्रय वापसी	500
प्रारंभिक स्टॉक	6,400
क्रय	32,000
प्रत्यक्ष व्यय	4,200
अंतिम स्टॉक	7,200

हल

	₹	₹
शुद्ध विक्रय (विक्रय – विक्रय वापसी ₹ 62,500 – ₹ 500)		62,000
घटा बिके हुए माल की लागत :		
प्रारंभिक स्टॉक	6,400	
जमा : क्रय	32,000	
जमा : प्रत्यक्ष व्यय	4,200	
घटा : अंतिम स्टॉक	(7,200)	35,400
सकल लाभ		26,600

(सकल लाभ = शुद्ध विक्रय–बिके हुए माल की लागत)

= ₹ 62,000 – ₹ 35,400

= ₹ 26,600

उदाहरण 3

विक्रम, एक व्यापारी, द्वारा वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 के लिए दी गई सूचना से बिके माल की लागत ज्ञात कीजिए तथा व्यवसाय के सकल लाभ/सकल हानि की गणना भी कीजिए।

	₹
विक्रय	1,20,000
क्रय	80,000
चुंगी	1,600
क्रय पर भाड़ा	4,500
क्रय वापसी	2,400
प्रारंभिक स्टॉक	27,600
अंतिम स्टॉक	32,400

हल :

	₹
बिके हुए माल की लागत	
प्रारंभिक स्टॉक	27,600
जमा शुद्ध क्रय (₹ 80,000 – ₹ 2,400)	77,600
जमा क्रय पर भाड़ा	4,500
जमा चुंगी	1,600
विक्रय के लिए उपलब्ध माल की लागत	1,11,300
घटा : अंतिम स्टॉक	32,400
बिके हुए माल की लागत	78,900
सकल लाभ	
विक्रय	1,20,000
घटा : बिके हुए माल की लागत	78,900
सकल लाभ	41,100

व्यापार खाता की आवश्यकता

व्यापार खाता निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति करता है :

टिप्पणी

1. **सकल लाभ का ज्ञान :** व्यापार खाता सकल लाभ की जानकारी प्रदान करता है। यह एक व्यावसायिक उद्यम का अपनी व्यापारिक क्रियाओं से अर्जित लाभ होता है। बिक्री पर सकल लाभ प्रतिशत व्यवसाय की सफलता की सीमा को दर्शाता है।
2. **समस्त प्रत्यक्ष खर्चों का ज्ञान :** सभी प्रत्यक्ष खर्चों को व्यापार खाते में ले जाया जाता है। प्रत्यक्ष व्यय वह व्यय है जिन्हें बिक्री के लिये माल के क्रय अथवा उत्पादन से सीधे जोड़ा जा सकता है। चालू वर्ष के खर्चों को बिक्री पर प्रतिशत की जब पिछले वर्षों के प्रतिशत से तुलना की जाती है तो इससे प्रबंधक को प्रत्यक्ष खर्चों पर नियंत्रण में सहायता मिलती है।
3. **भविष्य की हानियों का पूर्वोपाय :** यदि व्यापार खाता सकल हानि दर्शाता है तो इसके कारण ढूंढ़े जा सकते हैं तथा उनमें सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाए जा सकते हैं।

व्यापार खाते का प्रारूप

व्यापार खाता

वर्ष समाप्ति ..... के लिए

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
प्रारंभिक स्टॉक	×××××	विक्रय	×××××
क्रय		घटाया विक्रय वापसी	×××××
घटाया क्रय वापसी	×××××	सकल हानि	×××××
प्रत्यक्ष व्यय	×××××	(लाभ हानि खाता में	
ढुलाई		हस्तांतरित)	×××××
भाड़ा	×××××		
मजदूरी	×××××		
ईंधन एवं बिजली	×××××		
उत्पादन शुल्क	×××××		
कारखाने का किराया एवं विद्युत			
कारखाने का किराया एवं बीमा	×××××		
कार्य प्रबंधक का वेतन	×××××		
सकल लाभ–(लाभ हानि खाते में हस्तांतरण)	×××××		

व्यापार खाता की महत्त्वपूर्ण मदें :

1. **स्टॉक :** स्टॉक किसी एक तिथि को रखी वह वस्तुएँ हैं जिनकी अभी बिक्री होनी है। यह दो प्रकार का होता है— (क) प्रारंभिक स्टॉक (ख) अंतिम स्टॉक

   (क) प्रारंभिक स्टॉक : प्रारंभिक स्टॉक लेखा वर्ष के प्रारंभ में बचा हुआ वह माल है जिसकी बिक्री होनी बाकी है। इसे व्यापार खाते के नाम पक्ष में दर्शाया जाता है। किसी भी व्यवसाय के प्रथम वर्ष में कोई प्रारंभिक स्टॉक नहीं होता।

   (ख) अंतिम स्टॉक : यह लेखा वर्ष के अंत में बचा हुआ वह माल है जिसकी बिक्री नहीं हुई है। यह लागत मूल्य अथवा बाजार मूल्य जो भी कम हो पर दिखाया जाता है। इसे व्यापार खाते के जमा पक्ष में लिखा जाता है।

2. **क्रय :** क्रय का अर्थ है विक्रय के उद्देश्य से क्रय की गई वस्तुएँ। यह नकद एवं उधार दोनों हो सकती है। क्रय की गई वस्तुओं को व्यापार खाते के नाम की ओर लिखा जाता है। इन्हें सदा शुद्ध मूल्य पर दिखाया जाता है अर्थात् क्रय की कुल राशि में से (क्रय किये गये माल में से लौटा दी गई राशि) क्रय वापसी अथवा बाह्य वापसी) को घटा दिया जाता है। प्रेषण पर प्राप्त माल को क्रय नहीं माना जाता। इसी प्रकार से 'विक्रय अथवा वापस कर दें' के आधार पर प्राप्त माल को भी क्रय नहीं माना जाता।

3. **विक्रय :** विक्रय उस व्यावसायिक इकाई के द्वारा माल के विक्रय से प्राप्त कुल राशि को कहते हैं जिसका व्यापार खाता बनाया जाता है। इसमें नकद विक्रय एवं उधार विक्रय दोनों सम्मिलित हैं। इन्हें व्यापार खाते के जमा में लिखा जाता है। बिक्री को उसके शुद्ध मूल्य पर अर्थात कुल बिक्री में से बिक्री वापसी को घटाकर दिखाया जाता है। रोकड़ बिक्री जमा उधार बिक्री घटा बिक्री वापसी शुद्ध बिक्री है। बिक्री अथवा लौटा देने की शर्त पर भेजे गये माल को स्वीकृति मिलने पर ही बिक्री मानी जाती है।

4. **प्रत्यक्ष व्यय :** प्रत्यक्ष व्यय वह व्यय है जिनका संबंध सीधे तौर पर वस्तुओं के क्रय अथवा उनके उत्पादन से होता है। इन्हें व्यापार खाता के नाम में लिखा जाता है। इन्हें तलपट में दिखाए गए मूल्य पर ही लिखा जाता है। उदाहरण के लिए मजदूरी को उसके तलपट में दिखाए गए मूल्य पर व्यापार खाता के नाम में लिखा जाता है।

   प्रत्यक्ष व्यय की कुछ महत्त्वपूर्ण मदें :

   i. मजदूरी अर्थात उत्पादन से संबंधित मजदूरी। यदि इसमें भवन निर्माण पर किया गया मजदूरी व्यय अथवा कार्यालय के लिए फर्नीचर बनाने के लिए मजदूरी का भुगतान सम्मिलित है तो इसे मजदूरी की मद में से घटा दिया जाएगा।

टिप्पणी

ii. ढुलाई : भाड़ा, ढुलाई अर्थात बिक्री के लिए क्रय किए गए माल अथवा उत्पादन के लिए कच्चे माल का क्रय पर ढुलाई का भुगतान।

iii. अन्य दूसरे प्रत्यक्ष व्यय हैं सीमा शुल्क एवं आयात कर, पैकिंग का सामान, गैस, बिजली, पानी, ईंधन, तेल, गैस, ग्रीस, बिजली, कारखाने का किराया एवं बीमा एवं अन्य दूसरी मदें।

5. सकल लाभ/सकल हानि : यह शुद्ध विक्रय से आगम का बिक्री की गई वस्तुओं की लागत पर आधिक्य है। सकल लाभ शुद्ध बिक्री और बिक्री की गई वस्तुओं के लागत की अन्तर राशि के बराबर होता है। यदि जमा पक्ष का योग नाम पक्ष के योग से अधिक है तो आधिक्य राशि को सकल लाभ कहेंगे तथा इसे व्यापार खाते के नाम पक्ष में दिखाया जाएगा। दूसरी ओर यदि नाम पक्ष जमा पक्ष से अधिक है तो अंतर राशि सकल हानि कहलायेगी तथा इसे व्यापार खाते के जमा पक्ष में दिखाया जायेगा।

सकल लाभ = शुद्ध बिक्री – बिक्री की गई वस्तुओं की लागत

सकल हानि = बिक्री की गई वस्तुओं की लागत – शुद्ध बिक्री

पाठगत प्रश्न 16.2

I. रिक्त स्थानों की उचित शब्द/शब्दों से पूर्ति कीजिए :

i. वित्तीय विवरण सामान्यतः ..... प्रकार के होते हैं।

ii. आय विवरण ..... खाता एवं ..... खाता को मिलाकर बनता है।

iii. व्यापार खाता व्यवसाय की क्रियाओं के ..... निर्धारण के लिए बनाया जाता है।

iv. बिक्री पर प्रतिशत सकल लाभ व्यवसाय की ..... की डिग्री का द्योतक है।

II. निम्नलिखित में परिणाम दिखाइए :

i. बिक्री – विक्रय वापसी =

ii. क्रय – क्रय वापसी =

iii. व्यापार खाते के जमा स्तंभ का योग – व्यापार खाते के नाम स्तंभ का योग =

iv. बिक्री किये माल की कुल लागत – कुल बिक्री =

16.3 हस्तांतरण प्रविष्टियाँ

व्यापार खाता बनाने से पहले व्यावसायिक इकाई के रोजनामचे में अंतिम/हस्तांतरण प्रविष्टियाँ की जाती है।

टिप्पणी

यह रोजनामचा प्रविष्टियाँ इस प्रकार है—

(क) नाम शेषों का हस्तांतरण

व्यापार खाता	नाम
आरम्भिक स्टॉक खाता से	
क्रय खाता से	
प्रत्यक्ष व्यय खाता से	
विक्रय वापसी खाता से	
(प्रारम्भिक व्यय, क्रय, प्रत्यक्ष व्यय एवं विक्रय वापसी खाता के शेषों का हस्तांतरण)	

(ख) जमा मदों का हस्तांतरण

विक्रय खाता	नाम
अंतिम स्टाक खाता	नाम
क्रय वापसी खाता	नाम
व्यापार खाता से	
(तलपट से विक्रय, अन्तिम स्टाक, क्रय वापसी खाता के जमा शेषों का हस्तांतरण)	

(ग) सकल लाभ का हस्तांतरण

व्यापार खाता	नाम
लाभ–हानि खाता से	
(सकल लाभ का हस्तांतरण)	

(घ) सकल हानि का हस्तांतरण

लाभ–हानि खाता	नाम
व्यापार खाता से	
(सकल हानि का हस्तांतरण)	

उदाहरण 4

वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 को खाता बही से लिए गये शेष नीचे दिये गये हैं:

खाते का नाम	*राशि (₹)*
प्रारंभिक स्टॉक	12,000
क्रय	52,000
विक्रय	74,000

टिप्पणी

क्रय वापसी	2,000
भाड़ा आंतरिक	800
मजदूरी	4,200
अंतिम स्टॉक	13,500

मुख्य रोजनामचा में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
2014				
मार्च 31	व्यापार खाता नाम		69,000	
	प्रारंभिक स्टॉक खाता से			12,000
	क्रय खाता से			52,000
	मजदूरी खाता से			4,200
	भाड़ा आंतरिक खाता से			800
	(नाम शेषों का व्यापार खाता में हस्तांतरण)			
मार्च 31	विक्रय खाता नाम		74,000	
	क्रय वापसी खाता नाम		2,000	
	अंतिम स्टाक खाता नाम		13,500	
	व्यापार खाता से			89,500
	(जमा की मदों का व्यापार खाते में हस्तांतरण)			
मार्च 31	व्यापार खाता नाम		20,500	
	लाभ–हानि खाता से			20,500
	(सकल लाभ का लाभ हानि खाते में हस्तांतरण)			

उदाहरण 5

नीचे रोहित एण्ड संस की खाता बही से लिये गये शेष वर्ष 2014 की समाप्ति पर दिये गये हैं।

टिप्पणी

खाते का नाम	*₹*
स्टॉक (1.1.2014)	21,000
क्रय	1,40,000
विक्रय	2,24,000
क्रय वापसी	8,000
विक्रय वापसी	12,000
मजदूरी	15,000
कारखाना बिजली	12,000
स्टॉक (31.12.2014)	26,500

मुख्य रोजनामचा में अंतिम प्रविष्टियाँ कीजिए।

हल :

रोजनामचा

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
2014				
दिस. 31	व्यापार खाता नाम		2,00,000	
	प्रारंभिक स्टाक खाता से			21,000
	क्रय खाता से			1,40,000
	विक्रय वापसी खाता से			12,000
	मजदूरी खाता से			15,000
	कारखाना बिजली खाता से			12,000
	(नाम के शेषों का व्यापार खाता में हस्तांतरण)			
	विक्रय खाता नाम		2,24,000	
	अंतिम स्टाक खाता नाम		26,500	
	क्रय वापसी खाता नाम		8,000	
	व्यापार खाता से			2,58,500
	(जमा शेषों का व्यापार खाते में हस्तांतरण)			
	व्यापार खाता नाम		58,500	
	लाभ–हानि खाता से			58,500
	(सकल लाभ का हस्तांतरण)			

पाठगत प्रश्न 16.3

नीचे दी गई मदों को यदि व्यापार खाते के नाम में लिखा जाना है तो 'नाम' और जमा में लिखा जाना है तो 'जमा' शब्द लिखें :

(i) अंतिम स्टॉक

(ii) भाड़ा आंतरिक

(iii) विक्रय

(iv) सीमा शुल्क

16.4 लाभ हानि खाता

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि आय विवरण दो खातों से मिलकर बनता है—व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता। आप यह भी जान चुके हैं कि व्यापार खाता व्यवसाय की व्यापारिक क्रियाओं के सकल लाभ अथवा सकल हानि का निर्धारण करने के लिए बनाया जाता है। लेकिन यह किसी उद्यम के व्यावसायिक परिचालन का अंतिम परिणाम नहीं होते हैं प्रत्यक्ष खर्चों के अतिरिक्त कुछ अप्रत्यक्ष व्यय भी होते हैं। इनको सुविधानुसार 'कार्यालयी एवं प्रशासनिक व्यय', विक्रय एवं वितरण व्यय, वित्तीय व्यय, अवक्षयण एवं रख-रखाव खर्च आदि में विभक्त किया जा सकता है।

इसी प्रकार आगम बिक्री के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आय प्राप्त हो सकती है। जैसे कि निवेश पर ब्याज, लेनदारों से प्राप्त बट्टे की राशि, कमीशन प्राप्ति आदि। एक और खाता बनाया जाता है जिसमें सभी अप्रत्यक्ष व्यय एवं विक्रय के अतिरिक्त आगम के अन्य स्रोतों से प्राप्तियों को लिखा जाता है। जब इस खाते का शेष निकाला जाता है तो यह लाभ (अथवा हानि) दिखाता है। इस खाते को लाभ-हानि खाता कहते हैं यह खाता जब लाभ दिखाता है तो उसे शुद्ध लाभ और यदि हानि दिखाता है तो इसे शुद्ध हानि कहते हैं।

लाभ हानि खाते का प्रारूप

मै. ..... का लाभ हानि खाता

वर्ष समाप्ति ..... के लिए

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
सकल हानि		सकल लाभ	

टिप्पणी

वेतन		बट्टा प्राप्त किया	
किराया, रेट्स, एवं कर		कमीशन प्राप्त किया	
बीमा प्रीमियम		लाभांश प्राप्त किया	
विज्ञापन		निवेश पर ब्याज	
कमीशन दिया		किराया प्राप्त किया	
बट्टा दिया		शुद्ध हानि का पूँजी खाते	
मरम्मत एवं नवीनीकरण		में हस्तांतरण	
अप्राप्य ऋण			
अप्राप्य व्यय			
यात्रा व्यय			
बैंक खर्च			
बिक्री कर/मूल्य जमा कर			
स्थाई संपत्तियों पर			
अवक्षयण			
शुद्ध लाभ का पूँजी			
खाते में हस्तांतरण			

लाभ-हानि खाते की कुछ महत्त्वपूर्ण मदें

जैसा कि पहले बताया जा चुका है अप्रत्यक्ष व्यय लाभ हानि खाते के नाम की ओर लिखे जाते हैं। इन्हें निम्न में विभक्त किया जा सकता है—

नाम की मदें

1. **विक्रय एवं वितरण व्यय :** बिक्री के लिए जो व्यय किये जाते हैं उन्हें विक्रय एवं वितरण व्यय कहते हैं। यह खर्च इस प्रकार है :

   बिक्री पर भाड़ा/भाड़ा बाह्य, विज्ञापन, बिक्री खर्च, यात्रा खर्च, विक्रयकर्ता का कमीशन, डिलीवरी वैन पर अवक्षयण, डिलीवरी वैन के ड्राइवर का वेतन।

2. **कार्यालयी एवं प्रशासनिक व्यय :** यह कार्यालय के कर्मचारियों एवं रख–रखाव पर व्यय होते हैं। इस शीर्ष के अधीन कुछ व्यय इस प्रकार हैं—

   किराया, रेट्स एवं कर, पोस्टेज, प्रिंटिंग एवं स्टेशनरी, बीमा, कानूनी व्यय, अंकेक्षण, फीस, कार्यालयी वेतन आदि।

3. **वित्तीय व्यय :** व्यवसाय के लिए वित्त की व्यवस्था करनी होती है तथा इस संबंध में जो व्यय किये जाते हैं उन्हें वित्तीय व्यय कहते हैं। कुछ वित्तीय व्यय इस प्रकार हैं—ऋण पर ब्याज, पूँजी पर ब्याज, बिलों पर छूट आदि।

टिप्पणी

4. **अवक्षयण एवं रख-रखाव संबंधी व्यय :** अचल संपत्ति जैसे कि मशीन, भवन, फर्नीचर आदि के कुछ मूल्य को लाभ हानि खाते में उसी वर्ष में नहीं लिख दिया जाता जिसमें इसका क्रय किया गया है। इस प्रकार की संपत्तियाँ आगे आने वाले कई वर्षों तक व्यवसाय को चलाने में सहायक होती है। इसीलिए इन संपत्तियों के एक भाग को ही व्यय माना जाता है तथा इसे अवक्षयण के रूप में लाभ–हानि खाते में लिख दिया जाता है। अवक्षयण का अर्थ है—टूट-फूट, प्रयोग, समय का बीतना, अप्रचलन इत्यादि के कारण अचल संपत्ति के मूल्यों में कमी आना। अवक्षयण को छोड़कर मरम्मत तथा नवीनीकरण संबंधी व्यय भी इसी श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।

5. **अन्य खर्चे :** ये वह खर्चे होते हैं जो कि ऊपर लिखित खर्चों में सम्मिलित नहीं किए गए है जैसे– आग, चोरी के कारण हानि व खर्चे इत्यादि।

जमा की मदें

लाभ–हानि खाते के जमा की ओर आगम आय की मदें लिखी जाती हैं। लाभ–हानि खाते के इस पक्ष में प्रथम मद व्यापार खाते से हस्तांतरित सकल लाभ की होती है। जमा के पक्ष में लिखी जाने वाली अन्य मदें हैं—निवेश पर ब्याज, स्थाई जमा पर ब्याज, किराया प्राप्ति, कमीशन प्राप्ति, बट्टा प्राप्ति, अंशों पर लाभांश आदि।

लाभ-हानि खाता बनाने की आवश्यकता

एक व्यावसायिक इकाई का लाभ हानि खाता बनाने की आवश्यकता को इस प्रकार से बताया जा सकता है :

(i) किसी व्यवसाय का एक लेखा वर्ष के शुद्ध लाभ अथवा शुद्ध हानि का ज्ञान,

(ii) किसी एक वर्ष का शुद्ध लाभ का पिछले वर्ष अथवा वर्षों के लाभों से तुलना की जा सकती है। इससे यह तय किया जा सकता है कि व्यवसाय को कुशलतापूर्वक चलाया जा रहा है अथवा नहीं,

(iii) लाभ हानि खाते में जो खर्चे दिखाए गए हैं उनकी तुलना पिछले वर्ष अथवा वर्षों के खर्चों की राशि से तुलना की जा सकती है। इससे यह निर्धारित करने में सहायता मिलती है कि क्या इन खर्चों पर किसी प्रकार के नियंत्रण की आवश्यकता है।

पाठगत प्रश्न 16.4

I. नीचे खर्च एवं आय की मदें दी गई हैं जिन्हें लाभ-हानि खाते में लिखना है। प्रत्येक मद के आगे व्यय होने पर 'ई' तथा आय होने पर 'आई' लिखें।

(i) स्थाई जमा पर ब्याज

टिप्पणी

(ii) विज्ञापन

(iii) बीमा प्रीमियम

(iv) लेनदारों द्वारा दी गई छूट

(v) बिक्री पर भाड़ा

II. बताइए कि नीचे दिए गए कथन सत्य हैं अथवा असत्य। 'सत्य' होने पर सत्य तथा 'असत्य' होने पर 'असत्य' लिखें :

(i) लाभ–हानि खाता एक व्यावसायिक इकाई का सकल लाभ ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है।

(ii) आय की मदें लाभ–हानि खाते के जमा पक्ष में लिखी जाती है।

(iii) लाभ–हानि खाता बनाकर ज्ञात किया गया शुद्ध लाभ को व्यापार खाता में हस्तांतरण किया जाता है।

(iv) लाभ–हानि खाता किसी एक लेखा वर्ष के लिए बनाया जाता है।

16.5 लाभ हानि खाता की हस्तांतरण प्रविष्टियाँ

पिछले अनुभाग में दिये प्रारूप के अनुसार लाभ हानि खाता तैयार करने से पहले उद्यम के रोजनामचे में अंतिम प्रविष्टियाँ की जाती हैं। यह रोजनामचा प्रविष्टियाँ इस प्रकार हैं—

(i) अप्रत्यक्ष व्यय खातों का हस्तांतरण :

लाभ-हानि खाता	नाम
वेतन खाता से	
बीमा प्रीमियम खाता से	
अप्राप्य ऋण खाता में	
बट्टा खाता से	
(अप्रत्यक्ष व्ययों का हस्तांतरण)	

(ii) आय एवं लाभ की मदों का हस्तांतरण

निवेश पर ब्याज खाता	नाम
किराया प्राप्ति खाता	नाम
बट्टा प्राप्ति खाता	नाम
लाभ-हानि खाता से	
(आय की मदों का हस्तांतरण)	

(iii) शुद्ध लाभ का हस्तांतरण

लाभ–हानि खाता नाम
पूँजी खाता से
(शुद्ध लाभ का पूँजी खाता में हस्तांतरण)

(iv) शुद्ध हानि का हस्तांतरण

पूँजी खाता नाम
लाभ हानि खाता से
(शुद्ध हानि का पूँजी खाता में हस्तांतरण)

उदाहरण 6

माया गुप्ता एंड संस की लेखा बहियों से 31 मार्च, 2014 की समाप्ति पर लिये गये शेष नीचे दिये गये हैं। इसी तिथि को आवश्यक अंतिम प्रविष्टियाँ कीजिए :

मदें	*नाम शेष (₹)*	*जमा शेष (₹)*
सकल लाभ	65,000	
वेतन	11,500	
अंकेक्षण फीस	400	
बीमा प्रीमियम	800	
ब्याज प्राप्त किया		1,600
बट्टा (जमा)		460
विज्ञापन	1,200	
अप्राप्य ऋण	150	
बट्टा दिया	340	
अवक्षयण	460	
किराया प्राप्त हुआ	—	1,800

हल :

रोजनामचा प्रविष्टियाँ :

तिथि	*विवरण*	*खा.पृ. सं.*	*नाम राशि (₹)*	*जमा राशि (₹)*
(i)	व्यापार खाता नाम लाभ–हानि खाता से (सकल लाभ का लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरण)		65,000	65,000

टिप्पणी

(ii)	लाभ–हानि खाता	नाम		14,850	
	वेतन खाता से				11,500
	अंकेक्षण खाता से				400
	बीमा प्रीमियम खाता से				800
	विज्ञापन खाता से				1,200
	अप्राप्य ऋण खाता से				150
	बट्टा दिया खाता से				340
	अवक्षयण खाता से				460
	(खर्च की मदों का लाभ-हानि खाता में हस्तांतरण)				
(ii)	ब्याज खाता	नाम		1,600	
	बट्टा प्राप्ति खाता	नाम		160	
	किराया खाता	नाम		1,800	
	लाभ–हानि खाता से			3,860	
	(आय की मदों का लाभ हानि खाता में हस्तांतरण)				
(iii)	लाभ–हानि खाता	नाम		54,010	
	पूँजी खाता से				54,010
	(शुद्ध लाभ का पूँजी खाता में हस्तांतरण)				

उदाहरण 7

रबीना एण्ड ब्रादर्स की लेखा पुस्तकों से 31 मार्च, 2014 को निम्नलिखित खाता शेष उठाए गए। इन शेषों की वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 को लाभ हानि खाता बनाने के लिये रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए।

	₹
सकल लाभ	65800
वेतन	8400
किराए का भुगतान किया	2400
बट्टे की छूट दी	500
निवेश पर ब्याज	3100
विज्ञापन	1800
व्यापार व्यय	1600

टिप्पणी

अप्राप्य ऋण	500
अवक्षयण	600
बीमा प्रीमियम	800
कमीशन प्राप्त किया	2700

हल :

रोजनामचा

तिथि	विवरण	खा.पृ. सं.	नाम राशि (₹)	जमा राशि (₹)
2014				
मार्च 31	व्यापार खाता नाम		65,800	
	लाभ–हानि खाता से			65,800
	(सकल लाभ का लाभ–हानि खाते में हस्तान्तरण)			
मार्च 31	लाभ–हानि खाता नाम		16,600	
	वेतन खाता से			8,400
	किराया खाता से			2,400
	बट्टा दिया खाता से			500
	विज्ञापन खाता से			1,800
	व्यापार खर्चे खाता से			1,600
	अप्राप्य ऋण खाता से			500
	अवक्षयण खाता से			600
	बीमा प्रीमियम खाता से			800
	(नाम शेष के खातों का लाभ हानि खाते में हस्तांतरण)			
मार्च 31	कमीशन खाता नाम		2,700	
	ब्याज खाता नाम		3,100	
	लाभ–हानि खाता से			5,800
	(जमा शेष का लाभ हानि खाता में हस्तांतरण)			
मार्च 31	लाभ–हानि खाता नाम		55,000	
	पूँजी खाता से			55,000
	(शुद्ध लाभ का पूँजी खाता में हस्तांतरण)			

टिप्पणी

प्रचालन लाभ

प्रचालन लाभ प्रचालन व्यय पर सकल लाभ का आधिक्य होता है। सकल लाभ विक्रय किए माल की लागत पर विक्रय आगम का आधिक्य होता है। प्रचालन व्यय में कार्यालयी एवं प्रशासनिक व्यय, विक्रय एवं वितरण व्यय नकद छूट, देय विपत्रों पर ब्याज एवं अन्य लघु अवधि ऋण, अप्राप्य ऋण आदि सम्मलित होते हैं। शुद्ध विक्रय का अर्थ है नकद विक्रय जमा उधार विक्रय घटा विक्रय वापसी।

प्रचालन लाभ = शुद्ध विक्रय – प्रचालन व्यय

= शुद्ध विक्रय – (विक्रय माल की लागत + प्रशासनिक एवं कार्यालयी व्यय + विक्रय एवं वितरण व्यय)

अथवा

प्रचालन लाभ = शुद्ध लाभ + गैर प्रचालन व्यय – गैर प्रचालन आय

उदाहरण 8

निम्न सूचना से प्रचालन लाभ की गणना कीजिए :

	₹		₹
सकल लाभ	44,000	ऋण पर ब्याज	200
बाह्य भाड़ा	480	निवेश पर ब्याज	280
विज्ञापन	1,200	प्रिंटिग एवं स्टेशनरी	360
वेतन	17,800	फर्नीचर के विक्रय पर हानि	3,500
किराया एवं कर	6,200	सामान्य व्यय	140
बिजली व्यय	1,500	दान	510
बीमा व्यय	240	किराया प्राप्त किया	600
अप्राप्य ऋण	150	आग से हानि	2,000
अंकेक्षण फीस	200	मशीन की विक्रय से लाभ	5,000

हल :

प्रचालन व्यय की गणना

		₹	₹
सकल लाभ			44,000
घटा :	विक्रय एवं वितरण व्यय :		
	बाह्य भाड़ा	480	
	विज्ञापन	1,200	
	अप्राप्य ऋण	1,500	1,830

घटा :	कार्यालय एवं प्रशासन व्यय :			
	वेतन	17,800		
	किराया एवं कर	6,200		
	बिजली	1,500		
	बीमा	240		
	अंकेक्षण फीस	200		
	प्रिंटिग एवं स्टेशनरी	360		
	सामान्य व्यय	140	26,440	(28,270)
				15,730

स्थिति विवरण/तुलन पत्र

स्थिति विवरण अथवा तुलन पत्र एक और वित्तीय विवरण है। स्थिति विवरण वह विवरण है जो किसी तिथि विशेष जो सामान्यतः लेखा वर्ष के अंत में किसी व्यावसायिक इकाई की वित्तीय स्थिति का निर्धारण करने के लिए बनाया जाता है। इसके दो पहलू होते हैं परिसंपत्तियाँ एवं देयताएँ।

> फ्रांसिस आर स्टील के शब्दों में, ''स्थिति विवरण एक चलते व्यवसाय की एक निश्चित समय पर वित्तीय स्थिति को दर्शाता है।''
>
> फ्री मैन के शब्दों में, ''स्थिति विवरण एक निश्चित तिथि को व्यवसायिक परिसंपत्तियों, देयताओं एवं स्वामित्व की मदों की सूची होती है।''

किसी व्यवसाय की वित्तीय स्थिति उस व्यवसाय की परिसंपत्तियों एवं उनके विरुद्ध विभिन्न लोगों की देयताओं की सूची होती है। वित्तीय स्थिति को दर्शाने के लिए जो विवरण तैयार किया जाता है, उसे स्थिति विवरण कहते हैं।

स्थिति विवरण के संबंध में विस्तार से अगले पाठ में चर्चा करेंगे।

पाठगत प्रश्न 16.5

I. निम्नलिखित मदों को लाभ हानि खाते के यदि नाम में लिखा जाना है तो 'नाम' लिखें और यदि जमा में लिखा जाता है तो 'जमा' लिखें :

(क) कानूनी खर्चे (ख) शुद्ध हानि (ग) किराया प्राप्त किया
(घ) बट्टे की छूट दी (ङ) वेतन

II. (क) आय विवरण के अतिरिक्त जो वित्तीय विवरण बनाया जाता है उसका नाम लिखिए।

टिप्पणी

(ख) इसे क्यों बनाया जाता है?

(ग) इसे कब बनाया जाता है?

(घ) इसके दो तत्त्व के नाम दीजिए।

III. (क) प्रचालन लाभ = शुद्ध विक्रय – .....

(ख) प्रचालन लाभ = शुद्ध लाभ + गैर प्रचालन व्यय – .....

(ग) यदि शुद्ध विक्रय = ₹ 2,00,000 एवं प्रचालन लागत = ₹ 1,50,000 तो प्रचालन लाभ की गणना कीजिए।

आपने क्या सीखा

- वित्तीय विवरण दो प्रकार के होते हैं :

  (क) आय विवरण अर्थात व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता।

  (ख) स्थिति विवरण अर्थात तुलन-पत्र

- व्यापार खाता व्यवसाय की व्यापारिक गतिविधियों के परिणाम के निर्धारण के लिए तैयार किया जाता है।
- व्यापार खाता लाभ को दर्शा सकता है (अर्थात् बिक्री का विक्री की वस्तुओं की लागत से अधिक होना या जमा पक्ष का नाम पक्ष से अधिक होना। इसे सकल लाभ कहते हैं।

  व्यापार खाता हानि दर्शा सकता है। (अर्थात् बिक्री की वस्तुओं की लागत का बिक्री से अधिक होना या नाम पक्ष का जमा पक्ष से अधिक होना। इसे सकल हानि कहते हैं।
- लाभ–हानि खाता शुद्ध लाभ/शुद्ध हानि के निर्धारण के लिये बनाया जाता है।

  शुद्ध लाभ = सकल लाभ + अन्य आय – अप्रत्यक्ष व्यय

  यह शुद्ध हानि भी दर्शा सकता है।

  सभी अप्रत्यक्ष व्यय लाभ–हानि खाते के नाम पक्ष में दिखाए जाते हैं।

  सभी आय एवं लाभ की मदों को लाभ–हानि खाते के जमा की ओर दिखाया जाता है।
- स्थिति विवरण फर्म की तिथि विशेष को वित्तीय स्थिति को निर्धारण करने के लिए बनाया जाता है।

पाठान्त प्रश्न

1. वित्तीय विवरणों का अर्थ बताइए।
2. वित्तीय विवरणों के उद्देश्यों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

टिप्पणी

3. निम्न शब्दों को उदाहरण सहित संक्षेप में समझाइए।
   (क) आगम व्यय
   (ख) आगम प्राप्तियाँ
   (ग) पूँजीगत व्यय
   (घ) पूँजीगत प्राप्तियाँ।
4. पूंजीगत व्यय एवं आगम व्यय का निम्न के आधार पर अंतर कीजिए।
   (क) अर्जन क्षमता
   (ख) वित्तीय विवरणों में स्थान
   (ग) व्ययों का उद्‌गम (Occurence)
5. 'पूँजीगत प्राप्तियाँ' एवं 'आगम प्राप्तियाँ' में अंतर कीजिए।
6. बिक्री की गई वस्तुओं की लागत की गणना किस प्रकार की जाती है?
7. व्यापार खाता किसे कहते हैं? इसको क्यों बनाया जाता है?
8. सकल लाभ की गणना किस प्रकार से की जाती है?
9. लाभ-हानि खाते का क्या अर्थ है? इसे क्यों बनाया जाता है?
10. लाभ-हानि खाता कब शुद्ध लाभ दर्शाता है?
11. प्रत्यक्ष व्यय क्या होते हैं? इन खर्चों के दो उदाहरण दीजिए।
12. स्थिति विवरण का अर्थ बताइए।
13. शबाना की निम्न शेष राशियों की सहायता से वर्ष समाप्ति 31 दिसंबर, 2014 के लिए बिक्री में से बिक्री गई वस्तुओं की लागत को घटा कर सकल लाभ अथवा सकल हानि ज्ञात कीजिए।

	₹
स्टॉक (1.1.2014)	26,500
क्रय	64,600
विक्रय	86,800
क्रय वापसी	2,600
विक्रय वापसी	1,800
भाड़ा आंतरिक	750
मजदूरी	1,850
अंतिम स्टॉक	31,100

टिप्पणी

14. सेठ ब्रादर्स की लेखा पुस्तकों से नीचे दिये गये शेषों की सहायता से वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 के लिए व्यापार खाता, लाभ-हानि खाता तैयार करने के लिए रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए :

	₹		₹
स्टॉक (1.4.2013)	20,000	बट्टा प्राप्त हुआ	1,500
क्रय	95,000	बिजली व्यय	5,000
आंतरिक वापसी	2,000	मजदूरी	14,000
आंतरिक भाड़ा	1,850	बिक्री कमीशन	5,500
बाह्य भाड़ा	1,200	मरम्मत एवं नवीनीकरण	2,000
सीमा शुल्क	3,000	सामान्य व्यय	8,000
बाह्य वापसी	5,000	बीमा	2,200
विक्रय	1,65,000	स्टॉक (31.3.14)	45,000

15. परिमल घोष की लेखा पुस्तकों से लिये गये शेष नीचे दिये गये हैं वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 के लिए व्यापार खाता एवं लाभ-हानि खाता बनाने के लिए रोजनामचा प्रविष्टियाँ कीजिए :

	₹		₹
स्टॉक (1.4.2013)	9,480	क्रय वापसी	1,800
क्रय	50,800	विज्ञापन	1,500
मजदूरी	1,200	कमीशन (जमा)	3,200
वेतन	3,400	किराएदार से किराया	
चुँगी	1,320	प्राप्त हुआ	2,800
किराया एवं कर	850	बिक्री	72,000
अप्राप्य ऋण	250	स्टॉक (31.3.14)	10,700
बट्टा (नाम)	360		
पूँजी पर ब्याज	760		

16. निम्नलिखित सूचना से वर्ष समाप्ति 31 मार्च, 2014 के लिए बिक्री किये माल की लागत की गणना कीजिए।

	₹		₹
प्रारंभिक स्टॉक	14,800	किराये का भुगतान किया	4,500
क्रय	65,700	प्रशासनिक व्यय	650

बाह्य वापसी	1,700	कारखाना व्यय	7,200
मजदूरी	12,500	अंतिम स्टॉक	28,400
भाड़ा	2,400		
सीमा शुल्क	3,200		

17. जय भगवान एंड संस की लेखा पुस्तकों से 31 मार्च, 2014 को ली गई मदों से व्यापार खाता एवं लाभ हानि खाता बनाने के लिए रोजनामचा प्रविष्टियां कीजिए।

	₹		₹
प्रारंभिक स्टॉक	16,000	किराया	3,600
क्रय	76,000	कार्यालयी व्यय	1,600
मशीन	28,000	भाड़ा	1,200
देनदार	21,600	विक्रय वापसियाँ	5,400
आहरण	7,200	**जमा शेष :**	
मजदूरी	1,500	पूँजी	70,000
बैंक	12,000	लेनदार	14,000
अवक्षयण	2,800	विक्रय	1,08,000
अंतिम स्टॉक	24,000	क्रय वापसियाँ	2,600

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

16.1 I. (i) पूँजी, (ii) आगम, (iii) स्थगित आगम, (iv) पूँजी

II. (क) वित्तीय स्थिति का निर्धारण (ख) सूचना स्रोत
(ग) प्रबंधकीय निर्णय लेने में सहायक
(घ) व्यावसायिक इकाई का शोधन सूचकांक

16.2 I. (i) दो, (ii) व्यापार एवं लाभ–हानि खाता,
(iii) सकल लाभ, (iv) सफलता

II (i) शुद्ध विक्रय (ii) शुद्ध क्रय
(iii) सकल लाभ (iv) सकल हानि

16.3 (i) जमा (ii) नाम (iii) जमा (iv) नाम

16.4 I. (i) आई (ii) ई (iii) ई (iv) आई (v) ई

II. (i) असत्य, (ii) सत्य, (iii) असत्य, (iv) सत्य

टिप्पणी

16.5 I. (क) नाम (ख) जमा (ग) जमा (घ) नाम (ङ) नाम

II. (क) स्थिति विवरण
(ख) संगठन की वित्तीय स्थिति दिखाने के लिए
(ग) लेखा वर्ष की समाप्ति पर
(घ) परिसम्पतियाँ, देयताएँ

III. (क) परिचालन लागत (ख) गैर–परिचालन लागत
(ग) ₹ 503,000

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

13. सकल लभ : ₹ 25,000

14. सकल लाभ : ₹ 74,150, शुद्ध लाभ ₹ 56,750

15. सकल लाभ ₹ 21,700, शुद्ध लाभ ₹ 20,580

16. बिक्री किये माल की लागत ₹ 75,700

17. सकल लाभ ₹ 21,000, शुद्ध लाभ ₹ 13,000

क्रियाकलाप

कम से कम चार व्यावसायिक इकाइयों के तलपट एकत्रित करें तथा उनमें दी गई मदों को निम्न में वर्गीकृत करें :

(क) आगम व्यय (ख) आगम प्राप्तियाँ
(ग) पूँजीगत व्यय (घ) पूँजीगत प्राप्तियाँ

संगठन का नाम	*व्यय की मदें*	*आगम प्राप्तियाँ*	*पूँजीगत व्यय*	*पूँजीगत प्राप्तियाँ*